International Journal of Technology and Applied Science (IJTAS)
E-ISSN: 2230-9004 ● Website: www.ijtas.com ● Email: editor@ijtas.com

किसान आत्महत्या और सामाजिक कार्य हस्तक्षेप

डॉ. जितेन्द्रसिंह आर. चुडासमा

I/C प्राचार्य, समाज कार्य महाविद्यालय, सलाल (साबरकांठा)

सार (Abstract):
भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ 60% से अधिक आबादी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। फिर भी पिछले दो दशकों में किसान आत्महत्या एक गंभीर राष्ट्रीय समस्या बन गई है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के अनुसार, भारत में प्रतिवर्ष लगभग 10,000 से अधिक किसान आत्महत्या करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र किसान आत्महत्या के सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक कारणों का विश्लेषण करता है और इसमें समाज कार्य (Social Work) की भूमिका और हस्तक्षेप रणनीतियों पर प्रकाश डालता है। यह अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों, सरकारी रिपोर्टों और गुजरात के संदर्भ में विशेष रूप से किया गया है।

प्रस्तावना (Introduction):
"जय जवान, जय किसान" का नारा देने वाले भारत में किसान आज सबसे अधिक संकट में है। गुजरात जो कभी हरित क्रांति का उदाहरण था, वहाँ भी साबरकांठा, बनासकांठा जैसे जिलों में छोटे और सीमांत किसानों की स्थिति दयनीय है। किसान आत्महत्या केवल एक व्यक्तिगत मृत्यु नहीं है, बल्कि यह हमारी कृषि व्यवस्था, बाजार व्यवस्था और सामाजिक समर्थन प्रणाली की विफलता है। एक समाज कार्य के विद्यार्थी और प्राध्यापक के रूप में हमें इसे केवल आंकड़ा नहीं, बल्कि एक मानवीय त्रासदी के रूप में देखना चाहिए।

1. किसान आत्महत्या की वर्तमान स्थिति (Current Scenario):
NCRB 2022 के अनुसार - भारत में 2022 में 11,290 किसानों/खेतिहर मजदूरों ने आत्महत्या की।सबसे अधिक मामले: महाराष्ट्र (38%), कर्नाटक (15%), आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और गुजरात।गुजरात में 2019-2022 के बीच 800+ किसानों ने आत्महत्या की, जिसमें 60% छोटे किसान (2 हेक्टेयर से कम जमीन वाले) थे।86% आत्महत्या करने वाले किसान कर्जदार थे।

2. किसान आत्महत्या के कारण (Causes):
{A} आर्थिक कारण:
1. कर्ज का जाल: साहूकारों और निजी बैंकों से 24% से 36% ब्याज पर लिया गया कर्ज। फसल खराब होने पर चुका नहीं पाते
2. फसल की विफलता: अनियमित वर्षा, जलवायु परिवर्तन, नकली बीज और कीटनाशक। साबरकांठा में पिछले 5 सालों में कपास और मूंगफली की पैदावार 30% घटी है।
3. बाजार की समस्या: न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) न मिलना, बिचौलियों का शोषण। लागत 2000 रुपये और भाव 1500 रुपये।

{B} सामाजिक कारण:

1. सामाजिक प्रतिष्ठा का डर: कर्ज न चुका पाने पर समाज में बेइज्जती का डर।
2. पारिवारिक दबाव: बेटी की शादी, बच्चों की फीस, बीमारी का खर्च।
3. सामूहिक परिवार का विघटन: पहले पूरा गांव मदद करता था, अब एकल परिवार में किसान अकेला पड़ गया है।

{C} मनोवैज्ञानिक कारण:

लगातार विफलता से निराशा, अवसाद (Depression), असहायता की भावना, नशे की लत। यह Durkheim के "Anomic Suicide" का सबसे बड़ा उदाहरण है - जहाँ समाज के नियम व्यक्ति की मदद नहीं कर पाते।

3.सामाजिक कार्य का हस्तक्षेप मॉडल (Social Work Intervention):

यहाँ ही समाज कार्य की सबसे बड़ी भूमिका है। हम केवल अनुदान नहीं, बल्कि सशक्तिकरण पर काम करते हैं।

रोकथाम स्तर पर (Preventive Level):

- जागरूकता शिविर: गाँव-गाँव में सरकारी योजनाओं - PM Kisan Samman Nidhi, फसल बीमा योजना, किसान क्रेडिट कार्ड की जानकारी देना।
- जैविक खेती और लागत कम करना: समाज कार्य महाविद्यालय द्वारा "कम लागत प्राकृतिक खेती" का प्रशिक्षण।
- बचत समूह (SHG): किसानों के स्वयं सहायता समूह बनाना ताकि वे साहूकार के पास न जाएं।

उपचारात्मक स्तर पर (Remedial Level):

- परामर्श (Counselling): प्रत्येक तालुका स्तर पर किसान हेल्पलाइन और मनोवैज्ञानिक परामर्श। सलाल में हमारा कॉलेज यह कर सकता है।
- कर्ज मुक्ति में मध्यस्थता: बैंक और किसान के बीच समाज कार्यकर्ता मध्यस्थ बने।
- वैकल्पिक रोजगार: खेती के साथ पशुपालन, मधुमक्खी पालन, बागवानी का प्रशिक्षण।

पुनर्वास स्तर पर (Rehabilitative Level):

- किसान की विधवा और बच्चों के लिए शिक्षा, पेंशन और रोजगार की व्यवस्था।
- सरकार की "किसान परिवार सहायता योजना" का लाभ दिलवाना।

4. सुझाव (Suggestions):

- प्राथमिक विद्यालय की तरह हर 10 गांव में एक "किसान परामर्श केंद्र" हो।
- समाज कार्य के पाठ्यक्रम में "कृषि सामाजिक कार्य" को एक अलग विषय बनाया जाए।
- MSP पर कानून और साहूकारी प्रथा पर सख्त नियंत्रण।
- किसानों के बच्चों के लिए कृषि में कैरियर गाइडेंस, ताकि वे खेती को बोझ नहीं, व्यवसाय समझें।

निष्कर्ष (Conclusion):

किसान आत्महत्या केवल कृषि समस्या नहीं, यह एक सामाजिक-मानसिक स्वास्थ्य समस्या है। जब तक किसान को केवल "अन्नदाता" कहकर उसकी पूजा करेंगे और बाजार में उसे "भिखारी" बनाकर छोड़ देंगे, तब तक आत्महत्याएं नहीं रुकेंगी। समाज कार्य का मूल मंत्र है - "लोगों को मदद करना ताकि वे खुद अपनी मदद कर सकें।" हमें किसानों को दया नहीं, अधिकार, ज्ञान और संगठन की शक्ति देनी होगी। तभी "आत्महत्या मुक्त गांव" का सपना साकार होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची.

1. Durkheim, Emile (1897). Suicide: A Study in Sociology. Free Press.
2. Desai, A. R. (1979). Rural Sociology in India. Popular Prakashan, Bombay.
3. Swaminathan, M. S. (2006). National Commission on Farmers (Swaminathan Commission) Report - Serving Farmers and Saving Farming. Ministry of Agriculture, Govt. of India.
4. Vasavi, A. R. (1999). Agrarian Distress in Bidar: Market, State and Suicides. Economic and Political Weekly, 34(32), 2263-2268.
5. Mohanty, B. B. (2005). We are Like the Living Dead: Farmer Suicides in Maharashtra. Journal of Peasant Studies, 32(2), 243-276.
6. Parthasarathy, G. & Shameem (1998). Suicides of Cotton Farmers in Andhra Pradesh. Economic and Political Weekly, 33(13), 720-726.
7. Dhanagare, D. N. (2016). The Writings of A.R. Desai on Agrarian Structure and Change. (Reprint of 1980s work).
8. Government of India (2007). Report of the Expert Group on Agricultural Indebtedness. Ministry of Finance, Banking Division.
9. Omvedt, Gail (1995). Farmers Suicides and Rural Society. Economic and Political Weekly.
10. Sainath, P. (2000). Everybody Loves a Good Drought: Stories from India's Poorest Districts. Penguin Books, New Delhi.
11. Shah, Ghanshyam (2004). Social Movements in India: A Review of Literature. Sage Publications.